।। ओ३म् ।।

प्रभु से विनय

भगवन् ! मैं प्रातःकाल की पवित्र वेला में आपके चरणों की वन्दना कर रहा हूँ। वन्दना का अभिप्राय है कि मैं अपने हृदय को उज्ज्वल बना रहा हूँ। आपकी शुद्ध पवित्र अमृत सम्वेदना के साथ प्रभु ! मैं अपने हृदय को निर्मल और स्वच्छ जल से स्वच्छ बनाना चाहता हूँ। हे प्रभु ! तेरा जो अमृतमयी ज्ञान है, अमृतमयी जो तेरी नम्रता है, अमृतमयी जो तेरी उदारता है, अमृतमयी जो तेरा उद्गम है, अमृतमयी जो हृदय है, अमृतमयी जो तेरा यह जगत् है, अमृतमयी, जो प्रभु मेरी ज्ञान की एक कामना है, उससे मैं अपने हृदय को पवित्र बनाना चाहता हूँ। हे प्रभु ! तू कितना उद्गम है, तू कितना उदार है, तू कितना महान् है, तू कितना व्यापक है, तेरी कितनी उज्ज्वलता प्रभु ! इस सँसार में व्यापक रही है। हे प्रभु ! तुम कितने व्यापक हो और मैं कितना अल्पज्ञता में रमण करता हूँ। मुझे यह प्रतीत नहीं है कि इससे आगे मुझे क्या भोजन प्राप्त होगा। परन्तु प्रभु ! आप मेरे उस भोजन को भी जानते हैं जो आगे आने वाला भोजन मुझे प्राप्त होगा। उनमें जो अमृत मुझे प्राप्त होगा उसको भी आप स्वतः जानने वाले हैं, परन्तु मेरे लिए कोई मार्ग ऐसा नहीं, मेरे लिए कोई स्थान ऐसा नहीं, जहाँ प्रभु ! मैं पाप कर्म करने के लिए उद्यत हो जाऊँ। प्रभु ! वह कौन सा स्थान है जहाँ मैं पाप कर्म कर सकता हूँ। परन्तु प्रभु ! पाप मैं उस काल में करता रहता हूँ, जब प्रभु ! आपका जो आनन्दमयी स्रोत है वह मेरे से पृथक हो जाता है। मैं उस आनन्दमयी जो ज्ञान है, अमृतमयी जो पवित्रवत् है मैं उसको अपने से दूर नहीं चाहता। हे जगत् रचन् अस्वनम्। प्रभु मैं आपको बारम्बार नमस्कार कह रहा हूँ। आप मेरी इस प्रातःकाल की नमः को स्वीकार करो क्योंकि आप उदार हैं, महान हैं, पवित्र हैं, शुद्ध हैं, आनन्दवत स्रोत हैं। हे प्रभु ! इसलिए मैं आपको बारम्बार नमस्कार कर रहा हूँ।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अँक	: 517	कुल पृष्ठ संख्या		समग्र अँक	: 592
वर्ष	: 44	44		समग्र वर्ष	: 50

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय		पृष्ठ संख्या
1.	प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2.	अनुक्रम		4
3.	शिव की याचना	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-20
4.	योग द्वारा आत्मा का विश्व भ्रमण	पूज्यपाद-गुरुदेव एवम् पूज्य महर्षि लोमश मुनि महाराज	21-36
5.	ऋषियों के उद्गार		37
6.	दान, पुस्तकों की सूची, प्राप्ति के स्थान व सूचना आदि		38-42

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेद मन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से प्रस्तुत है :-

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली

बैंक खाता नं.–0149000100229389, IFSC Code –PUNB–0014900

।। ओ३म् ।।

शिव की याचना

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं और उसका ज्ञान और विज्ञान भी सदैव अनन्तमयी माना गया है। क्योंकि ज्ञान सदैव नवीन बना रहता है, **ज्ञान और विज्ञान में कदापि भी वृद्धपन नहीं आता, क्योंकि वह सदैव नवीन बना रहता है।** सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के वर्तमान के काल तक वह सदैव नवीनता में सदैव परणित रहा। तो इसलिए हमें उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान के ऊपर सदैव अन्वेषण करना चाहिए। क्योंकि वह सदैव नवीनतम रहता है और प्रत्येक मानव की यह प्रबल इच्छा बनी रहती है कि मैं नवीन से नवीन बन जाऊँ, मेरा जीवन सदैव नवीन बना रहे। एक मानव वृद्धपन को प्राप्त हो गया है, अवस्था भी जीर्ण हो गयी है परन्तु उसके पश्चात् भी उस मानव के हृदय में यह कामना रहती है कि मैं नवीन बन जाऊँ और मैं पुनः से युवास्था में चला जाऊँ जैसे ज्ञान सदैव युवा रहता है। परमात्मा का ज्ञान भी सदैव वृद्धपन को प्राप्त नहीं होता। तो इसीलिए हम परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान के ऊपर सदैव विचार-विनिमय करते रहें क्योंकि उससे मानव चिन्तन करता हुआ उबता नहीं है, वह उससे घृणित नहीं होता है क्योंकि परमपिता परमात्मा घृणा में नहीं है। वह घृणा से सदैव पृथक रहते हैं तो इसलिए वह घृणात्मक नहीं है। हम उस परमपिता परमात्मा जो घृणा से और द्वेष से मानो वंचित रहता है तो

उस परमपिता परमात्मा का ध्यानावस्थित हो करके हमें घृणा और राग द्वेषों से पृथक रहना चाहिए।

महादेव

इसलिए हमारे यहाँ वेद का प्रत्येक वेदमन्त्रः उस परमपिता परमात्मा के नवीनतम के ऊपर विचार-विनिमय करता रहा है और उसकी नवीनता का प्रत्येक वेदमन्त्र में मानों बखान होता रहा है। तो हम उस परमपिता परमात्मा जो हमारा देव है—वैदिक आचार्यों ने उसे महादेव के नाम से वर्णन किया है कि वह महादेवों का भी देव है जिसमें देवता सदैव रमण करते रहते हैं। वह महादेवाम् भूतम् देवत्वाम् ब्रह्मा वह देवता कहलाता है। तो इसलिए हम महादेव की उपासना करते रहें जो मानव के मध्य में रहता है, मानव की अन्तरात्मा में रहता है। तो हम उस महादेव की इसलिए परमात्मा का नामोकरण नाना प्रकार का वाची शब्द आता रहा है।

साम्य विचार

हमारे वैदिक साहित्य में दो प्रकार के शब्द होते हैं—एक यौगिक होता है तो द्वितीय रूढ़ि होता है। तो वह जो यौगिक शब्द है उस यौगिकता के ऊपर हमें सदैव विचार-विनिमय करना चाहिए और रूढ़ि को त्यागना चाहिए क्यों रूढ़ि बिना वास्तव में पालन नहीं होता है परन्तु रूढ़ि के गर्भ में भी यौगिकवाद रहना चाहिए और वह यौगिकवाद एक साम्यता में परणित रहता है। साम्य विचारों का नाम हमारे यहाँ रूढ़ि से पृथक होना है और उसे यौगिकवाद में परिवर्तित होना है। जैसे हमारे यहाँ शिव का वर्णन आता रहा है। शिव के दो प्रकार के पर्यायवाची माने गये हैं। एक शिव मानो देखो रूढ़ि में रहता है वह रूढ़ि क्या कि देखो शिव राजा रहा है वह राजन् मानो देखो हिमालय और देखो पृथ्वी का राजा भी शिव रहा है। जैसे त्रेता के काल में लंका का स्वामी महाराजा शिव रहा है। क्योंकि एक समय लंका अमृतम् शिवम् ब्रह्मा देखो शिव के राज्य में सूर्य भी उदय और अस्त नहीं होता था क्योंकि पृथ्वी के चारों ओर देखो शिव का राज्य रहता था। मेरे

प्यारे! देखो हिमालय से लेकर के लंका का स्वामी भी शिव कहलाता और हिमालय का राजा भी शिव था। मानो देखो कोई स्थली नहीं जहाँ शिव का राज्य न हो। राज्य का अभिप्राय अनुशासन और अनुशासन में जहाँ प्रजा ऊँचे विचारों वाली और अनुशासित हो उसका नाम शिव राज्य कहा जाता है। परन्तु इसी प्रकार शिव नाम जहाँ राजा को कहा गया है वही शिव नाम बेटा! देखो यौगिकवाद में शिव कहते हैं अनुसुतह जो अपने में अनुशासित हो और मानो देखो यह यौगिक शब्द है जहाँ शिव के शृंगार में मानव परणित होता है तो शृंगार में शृंगारित करता है और वह मुनिवरो! देखो शिव नाम अमृतम् देखो जो समाधिस्थ होने वाला हो। जैसे बेटा! मुझे मेरे प्यारे महामन्द जी ने एक समय वर्णन कराया क्या शिव के कण्ठ में मानो देखो सर्पो की माला रहती है, सर्पों की माला रहती है वह समाधिस्थ हो करके और यह मानो देखो विषाधर को जब हलाहल शिव को देखो हला शिव को अमृतम् मानो देखो विष को अपने में धारण कर लेता है तो वह शिव कहा जाता है तो मुनिवरो! देखो यह यौगिक शब्द बन जाता है।

सर्पों की माला

हमारे यहाँ देखो शिवाम् ब्रह्मा—योगी उसे कहा जाता है जो सर्पों की माला बना लेता है। यह जो सर्प है यह क्या है? हमारे वैदिक साहित्य में सर्पो का बड़ा महत्त्व आता रहा है, वास्तव में अहिंसा परमोधरम की विवेचना होती रही है परन्तु जब अहिंसा में परणित हो जाता है तो मानव का कोई शत्रु नहीं होता। इसी प्रकार देखो महाराजा शिव के कण्ठ में देखो सर्पो की माला रहती थी। माला का अभिप्रायः यह कि वह अपने यौगिकवाद से इतने उपराम हो गये क्या उसके जीवन में उसकी दृष्टि में योगी की दृष्टि में, कोई भी उसका शत्रु नहीं रहा अथवा कोई हिंसक नहीं रहा है। तो अहिंसामय विचार बनते ही मुनिवरो! देखो कोई शत्रु नहीं रहता। तो विचार आता रहता है हमारे यहाँ शिव की विवेचना करने वाले आज के अनन्य वेदमन्त्र हमें उद्घोष कर रहे हैं, नाना प्रकार की चर्चाएं कर रहे हैं कि हम देखो शिवम् ब्रह्मा वह

समाधिस्थ हो करके इस प्रकार का देखो यह निर्णायक विचार है क्या राजा को भी इस प्रकार रहना चाहिए, क्योंकि राजा के राष्ट्र में कोई हिंसक प्राणी न हो, स्वयँ भी मानो देखो हिंसक न हो तो राज्य अपने में, राष्ट्रीयवत् में देखो शिवात्रिय राज्य कहलाता है, वह शिव राज्य है। तो इसी प्रकार देखो शिव को हमें अपनी पूज्य दृष्टि से अपने को पूजक बना करके बेटा! उसका पूजन करना चाहिए। तो विचार आता रहता है कि वह जो देखो शिव है जो मुझे हिमालय की प्रतिभा में सदैव रत्त होता रहा है।

सर्प

मेरे प्यारे! देखो मर्यादा में जाने के पश्चात् जब मैं साहित्य के पृष्ठों को अपने समीप ले जाता हूँ तो देखो हिमालय पर विचरने वाला राजा मानो शिव अपने में कितना तपस्वी है क्या वह मुनिवरो! देखो अपने कण्ठ में देखो सर्पों की माला है। यह सर्प ब्रह्मणे कहीं-कहीं बेटा! देखो सर्वत्र अमृति **यह सर्प नाम मन को भी कहा गया है।** मानो यह जो मन है अपनी चंचलता को लिए हुए रहता है। **जब तक मन में चंचलता रहती है तो कोई मानव अपने में सफलता को प्राप्त नहीं होता।** कोई भी क्रियाकलाप हो चाहे वह संसार का हो, चाहे वह रूढ़ि हो, चाहे वह यौगिकवाद हो परन्तु जब तक मन चंचलता में रहता है, मन नाना प्रकार के संस्कारों का उद्गीत गाने वाला होता है तब तक मुनिवरो! देखो मन की एकाग्रता नहीं होती। तो मुनिवरों! देखो वह यौगिकवाद में सफलता को प्राप्त नहीं होता। तो मेरे प्यारे! देखो हमारे यहाँ सर्पम् ब्रव्हे कृतम् देवत्वाम् मनाहाः वेद का वाक्य कहता है कि जो सर्प है यह मन की संज्ञा में ऋषि-मुनियों ने इसका विश्लेषण किया है। उन्होंने कहा यह मन जैसे सर्प है तो इसलिए योगी को जब योग साधना में परणित होना चाहिए तो मानो देखो मन, मन रूपी सर्प की अपने कण्ठ में देखो माला को धारण करना चाहिए। वह माला में जब धारयामि बन जाता है तो धारयामि बन करके बेटा! देखो वह शिवत्राम् भूतम् ब्रहे वह शिव बन जाता है।

गंगा

विचार आता रहता है कि शिव नाम यह शृंगार से जब मानव शृंगारित होता है और देखो इसकी जटाओं में, जटाओं में मानो इस प्रकार की धारा हो जिसको हम गंगा के रूप में वर्णित करते हैं। तो वेद का ऋषि कहता है जब देखो ध्यानावस्थित होता है योगी तो यह प्राणों को एकाग्र करता—आज के हमारे वेद के मन्त्रों में आ रहा था प्राणम् ब्रव्हे प्राणम् प्राणा वृति देवत्वाम् मानो देखो यह जो प्राण हैं—प्राण को अपान में, अपान को व्यान में, व्यान को समान में, समान को उदान में जब मानो इनको, तीनों इन प्राणो को मिलान करना जानता है। मेरी प्यारी माता पूर्व काल में मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जिस काल में मेरी प्यारी माताएँ प्राण और अपान को दोनों का मिलान जान करके व्यान में विचरण करती रही हैं और व्यान को समान और उदान में चित्त के संस्कारो का दृष्टिपात करती रही हैं। तो प्रायः मानो देखो वह माताएँ उसके पश्चात गृह में उनका आदर और देखो वह सन्तान के सुयोग्य बनती हैं।

महर्षि दुर्वासा मुनि महाराज द्वारा मातों को शिक्षा

जो माता प्राण की प्रतिक्रिया को नहीं जानती—हमारे यहाँ देखो मुझे स्मरण आता रहता है महर्षि दुर्वासा मुनि का जीवन। दुर्वासा मुनि मुनिवरो! देखो वह अपने विद्यालय में कन्याओं को, ब्रह्मचारिणीयों को शिक्षा देते रहते परन्तु वह एक-एक मानो देखो दो-दो पल और घड़ियो में मानो देखो प्राण की प्रतिष्ठा में लगे रहते। प्राण और अपान को स्वयँ अपने में मिलान करते थे। परन्तु देखो वेद से उसी प्रकार का मन्त्र ले करके उसका प्रायः अध्ययन करते रहे हैं। तो मेरे प्यारे! देखो महर्षि दुर्वासा मुनि एक समय अपने विद्यालय में बेटा! कन्याओं को प्राण को अपान में और अपान को व्यान में, व्यान को समान में और समान को मानो देखो उदान में प्रवेश करते हुए वह कहा करते कि तुम्हारे गर्भस्थल में जो वीरत्व विद्यमान हो करके उसमें शिशु का प्रवेश हो गया है अथवा बाल्य है उस बाल्य के अपने में अनुभव करो, मानो देखो उसकी

अन्तरात्मा से मन और प्राण को एकाग्र करके तुम उस आत्मा के समीप पहुँचो और उसमें गुणों का गुणाधानम् करो। इस वेदमन्त्र का अध्ययन करो—जिस देवता, जो वेदमन्त्र का जो देवता है उसका अपने में देखो ध्यानावस्थित हो जाओ। तो मेरे प्यारे! देखो माता के उसी देवता के गुणों वाली सन्तान का जन्म होता है और प्राण की प्रतिष्ठा में सदैव लगी रहती हैं मेरी माताएँ। तो प्रायः देखो यहाँ विचार विनिमय क्या मुनिवरो! देखो दुर्वासा मुनि अपने में अद्वितीय अध्ययनशील थे और वह तपश्चर में परणित रहते। मेरे प्यारे! देखो वह देवियों, पुत्रियों को सदैव प्राण और अपान की शिक्षा देते हुए और मुनिवरों! देखो देवता का मन्त्र दे करके अपने में बड़े प्रसन्न रहते।

मैं जब द्वापर के काल में प्रवेश करता हूँ तो मानो मुझे प्रायः देखो यह मातब्रहे महाभारत की चर्चाएँ स्मरण आती रहती हैं जहाँ मुनिवरो! देखो उनके यहाँ नाना ब्रह्मचारियों को अस्त्रो-शस्त्रो की विद्या को अध्ययन कराने का कार्य जब देखो वह अमृतम् देखो वह द्रोणाचार्य करते रहे, उनका परीक्षाफल भी लेते रहे। इसी प्रकार मानो देखो महर्षि दुर्वासा देखो राजकन्याएँ उनके विद्यालय में प्रायः अध्ययन करती रहतीं, देवियाँ मानो देखो अध्ययन करती रहतीं। कुन्ती इत्यादि देखो जब अध्ययन करती रहतीं तो उनको प्राणो की शिक्षा देते रहते। तो स्वयँ प्राणायाम करना और वही प्राण की शिक्षा दे सकता है जो स्वयँ प्राण का, प्राणो का अभ्यासी होता है अन्यथा उसके मनो में चंचलता की प्रतिभा न आ जाए। क्योंकि प्राण और मन का जब मिलान होता रहता है तो चंचलता नहीं आयेगी और वह चंचलता के न आने से मानो देखो मन्त्रों की पुठ लगाता रहता है और मन्त्रों की पुठ लगा करके मुनिवरो! देखो वह विद्या अपने में सार्थक बन जाती है। तो मेरे प्यारे! देखो यह कहा करते क्या तुम्हें इन्द्र के गुणों वाला सन्तान को जन्म देना है तो मानो देखो इन्द्रश्चम् ब्रहा कृति देवत्वाम् इस वेदमन्त्र का अध्ययन करो और उसको मानो देखो उसका देवता इन्द्र है तुम इन्द्र को विचारने वाले बनो और विचारते हुए मानो देखो अपने में अपने अमृतम् विद्यालयों को ऊँचा

बनाओ। तो बेटा! देखो महर्षि दुर्वासा मुनि महाराज का जीवन जब मुझे स्मरण आता रहता है तो प्रायः हृदय गदगद हो जाता है और भी अनन्य इस प्रकार के ऋषि हुए हैं जो इस प्रकार की विद्याओं को जानने वाले थे क्योंकि वेद में विद्या की कोई भी कोई सीमा नहीं है। विद्या मानो देखो सीमा से रहित होती है तो वेद का मन्त्र सीमा से रहित है। क्योंकि यह परमात्मा का ज्ञान है उस विज्ञान में कोई भी ज्ञान और विज्ञान ऐसा उन्होंने नहीं त्यागा है, नहीं अप्रत किया है जिसके ऊपर अनुसन्धान न हो परन्तु वह अपने में सार्थक माना गया है। तो मेरे प्यारे! देखो महर्षि दुर्वासा मुनि प्रायः देखो विद्यालय में कन्याओं को शिक्षा देते और वह पुत्रियों को महान् बनाने की सदैव उनकी चेष्टा रहती।

मेरे प्यारे! देखो प्राण और अपान की विद्या दे करके और वह देवताओं का जिस देवता का अप्रद मन्त्र है उसी को वह देने का प्रयास जैसे पवन, देखो पवन देवता है वह पवन प्रादयो वह प्रजाम् जो मन्त्र है उसको वह परणित करते रहे और वेदमन्त्र का उद्गीत गाते रहे वायु अमृताम् ब्रव्हे कृतम् देवत्वाम् वायु आप्रीति अव्रणा इस प्रकार के वेदमन्त्रों का उद्गीत गाते रहते। वैदिक साहित्य में बेटा! इसके बड़े उद्गार हैं और वेदमन्त्रों में पवित्र यह विद्याएँ विद्यमान रहती हैं जिन विद्याओं को मेरे प्यारे! देखो मानव सार्थक बना सकता है और उसको क्रियात्मकता में ला करके यौगिक क्षेत्र में प्रवेश कर जाता है और माताएँ अपने में धन्य अपने को स्वीकार करती हैं।

धर्म

मेरे पुत्रो! देखो इसी प्रकार महर्षि दुर्वासा मुनि ने नाना प्रकार की विद्याओं को जैसे देखो आरम्भ ब्रहे कृतम् धर्मज्ञ ब्रहे उन्होंने धर्म का उपदेश दिया और धर्म को उन्होंने कहा कि धर्म देखो इससे धर्म स्थायी रहता है। धर्म कहते हैं जहाँ इन्द्रियों का सामञ्जस्य होता है और इन्द्रियों में मानो देखो जहाँ इन्द्रियों का ज्ञान समाहित हो करके एक सूत्र में परणित होता है तो इस प्रकार मानो धर्म को अपनाना चाहिए। जो प्रत्येक मानव का इन्द्रियों का जो धर्म है उसको विचार विनिमय करते

बेटा! देखो उसी वेद मन्त्र का जो प्रद वेदमन्त्र है उसी का अध्ययन होना चाहिए और वेद मन्त्र कहता है धर्मण ब्रहे धर्मसुतम् ब्रह्मा आत्माम् धर्मम् ब्रहे कृतम देवाः। तो यह मुनिवरो! देखो सर्वत्र विद्या मेरी पुत्रियों को, पुत्रो को होनी चाहिए जिससे बेटा! यह संसार देवप्रद बन जाए और देवता प्रवृति वाला बन जाए। तो मेरे प्यारे! देखो इससे पूर्व काल में ऋषि-मुनियों में यह प्रायः विद्या रही है क्या मुनिवरो! देखो धर्म प्रण अश्विनी कुमार इस प्रकार की विद्याओं को अपने में धारयामि बनाते रहें हैं।

आओ मेरे प्यारे! देखो मैं अपने विचारों को देता हुआ दूरी न चला जाऊँ विचार-विनिमय यह क्या मानो देखो देवता की हमें उपासना करनी है और जिस देवता को हमें लेकर के गमन करना है उन देवताओं के गुण हमें अपने में धारण करने चाहिए। मेरे प्यारे! देखो अग्न्याधान करते हुए अग्नम् ब्रह्मा अग्नम् देवत्वाम् देखो इस प्रकार वेदमन्त्रों का जब उद्गीत गाया जाता है तो उसी वेदमन्त्र को ले करके अग्न्याधान, अग्नि का ध्यान करती हैं माताएँ तो वह तेजस्वी अपने पुत्र को जन्म देती हैं, प्राण में उसी को समाहित कर लेती हैं। तो मानो देखो इस प्रकार की विद्याएँ प्रायः वैदिक साहित्य में हमें प्राप्त होती रही हैं। तो मुनिवरो! देखो मैं दुर्वासा की वार्ता प्रगट करने लगा।

शिव के स्वरूप

विचार विनिमय यह चल रहा था कि मैं शिव की याचना कर रहा था। हमारे वैदिक साहित्य में बेटा! शिव नाम परमपिता परमात्मा का है। पर्यायवाची शब्दों में शिव नाम राजा का भी है और शिव नाम प्राणों को भी कहा जाता है और शिव नाम मेरे प्यारे! आत्मा का नामोकरण, नामोकरण ब्रह्मे कृतम देखो कर्णस्सुतम ब्रह्मा वह नामोकरण में आता है कि शिव नाम मुनिवरो! देखो आत्मा को भी माना गया है। तो विचार आता है क्या मुनिवरो! देखो शिव नाम परमात्मा का है। शिव कहते हैं जो मेरे प्यारे! देखो शिवाम् ब्रह्मा देखो ऊर्ध्वा गति में हमारी ऊर्ध्वा गति बनाता है और ऊर्ध्वा में ही इस संसार को रचाता है तो उसका नाम शिव है। मेरे प्यारे! शिव बनकर के इसका संघार भी कर देता है मानो

देखो वह शिव कहा जाता है। रूद्र बन करके ही मुनिवरो! शिव की प्रतिष्ठा में प्रतिष्ठत हो जाता है। तो विचार आता रहता है कि शिव नाम यहाँ राजा को कहा गया है। परमात्मा का जो राजा वाची शब्द है, परमात्मा का जो शब्द है वह केवल कल्याण कारक है, वह मानो देखो अनुशासन है। इसी प्रकार देखो राजा का नाम भी शिव है—राजा जो जिसकी प्रजा ऊर्ध्वा में विचारों वाली हो, जिसकी प्रजा में ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने हों और जिस प्रजा में मानो मेरी पुत्रियाँ नाना प्रकार की विद्याओं का अध्ययन करने वाले पुरुष और देवियाँ होनी चाहिए जिससे गृह स्वर्ग बन जाए और गृह में मानवता का प्रसार हो जाए और राष्ट्र उसी के आश्रित हो करके गमन करता है। तो ऐसी प्रजा का जो स्वामीत्व होता है उसको शिव कहा जाता है।

माला

जिस राजा के राष्ट्र में साधक होते हैं, जिस राजा के राष्ट्र में राजा स्वयँ साधक होता है वह मानो देखो मन की माला बना करके और वह देखो प्रत्येक श्वास को मनका बना करके मेरे प्यारे! देखो ब्रह्म-सूत्र में जो पिरो करके उस माला को धारण करता है तो सर्वत्र माला को वह देखो सर्व माला को धारण कर लिया है। मानो देखो अभ्यस्त हो करके उसी सर्व गुणों का अप्रत करके बेटा! देखो उसका सर्प नामा उद्गीत गाने लगे परन्तु देखो वह सर्वसुतम ब्रह्मे वह सर्वत्र माला कहलाई जाती है जिसको धारण करके बेटा! देखो साधक अपने में योगाभ्यास करता है, साधक अपने में साधना करता हुआ अपने प्रभु के ज्ञान और विज्ञान में रत्त हो जाता है।

शिव नाम आत्मा का

इसी प्रकार बेटा! देखो जब ऋषि ने इस प्रकार अपना मन्तव्य दिया। तो विचारवेत्ताओं ने कहा सम्भूति ब्रह्मणा ब्रह्मणम् देवत्वाम् लोकाम् दिव्यम् ब्रह्मा लोकावृति देवाः तो इस प्रकार मुनिवरो! देखो वेद का मन्त्र जब अपने में गान गा रहा है। वेदमन्त्रों का उद्गीत गाता हुआ ऋषि कहता है सर्वत्रम् ब्रह्मा। मेरे प्यारे! देखो शिव नाम आत्मा को भी माना

गया है। मानो देखो आत्मा इसलिए शिव है कि वह मन उसी के आश्रित हो करके क्रियाकलाप करता है। जब मानो देखो मन की प्रतिभा, मन जब देखो इस आत्मा के प्रकाश में रमण करता है तो यह नाना प्रकार का रचनाकार बन जाता है और रचना में यह मानो बड़ा निपुण बन जाता है तो इसी प्रकृति का सूक्ष्मतम तन्तु होने से क्योंकि प्रकृति में अपना स्वतः ही रचना का स्वभाव विद्यमान है। बेटा! देखो रचना के कारण प्रकृति का होने से ही मानो देखो रचना में बड़ा निपुण है और यह नाना प्रकार की रचना करता रहता है। इसी प्रकार यह जब यही मानो देखो आत्मा जब नेत्रों के समीप रहती है तो भिन्न भिन्न प्रकार की प्रवृ त्त में देखो यह नेत्रों की ज्योति गमन करती रहती है। वह ज्योतिवान, बन करके मेरे प्यारे! जिस भी इन्द्री के साथ में मन रहता है और मन का समन्वय जब आत्मा से होता है तो यही मानो देखो विभक्त क्रिया को उत्पन्न करता रहता है, विभक्त क्रिया में रत्त रहता है तो इसीलिए मानो देखो वह मनम् ब्रह्मा वर्णस्सुतम् देवत्वाम् शिवाः। तो बेटा! देखो आत्मा का नाम इसीलिए शिव कहा जाता है क्योंकि प्राण जो रुद्रम ब्रह्मा। देखों उन प्राणों को रूद्र कहते हैं और रूद्र नाम मेरे पुत्रो! देखो शिव खुद को भी कहा जाता है। देखो जो अमृतम् जो शृंगार करने वाला है वह शिव है, वही मानो देखो रूद्र है। जब यह प्राण देखो इस शरीर से आत्मा के साथ निकल जाते हैं तो बेटा! देखो यह समाज रूदन करता है। मेरा देखो सम्बन्धी चला गया तो यह मानो देखो इसीलिए उसे रूद्र कहा जाता है, वह रूलाता रहता है। तो इसी प्रकार मुनिवरो! देखो शिवम् ब्रह्मा अमब्रहे शिव नाम बेटा! आत्मा को माना गया है। मानो देखो यह आत्मा जब मन मस्तिष्क और विचार को जब एकाग्र करता रहता है, एकाग्रित हो जाते हैं, तो बेटा! देखो उस मन की माला बन जाती है, सर्प माला और उसे संसार का भान नही रहता क्योंकि आत्मा एक रस रहने वाला है। आत्मा एक रस रहने से मेरे प्यारे! देखो उसको संसार का कोई भान नहीं रहता वह मन मस्तिष्क जब एकाग्र हो जाते हैं मन की माला बन जाती है और बुद्धि गन्धर्व बन जाती है तो मेरे प्यारे! देखो उसकी मृग रूप बन करके नीचरले स्थलों पर गमन हो जाता है।

यौगिक और रूढ़ि शब्द

विचार आता रहता है कि परमपिता परमात्मा के नाना प्रकार के मानो एक-एक शब्द के पर्यायवाची शब्द ये यौगिक शब्द बनता है और यौगिक शब्दों का अपना-अपना महत्त्व माना गया है। एक रूढ़ि शब्द होता है वह रूढ़ि में बेटा! देखो अज्ञान विराजमान होता है इसीलिए रूढ़ि नहीं रहनी चाहिए और रूढ़ि का विनाश हो करके यौगिकता होनी चाहिए। राजा के शब्दों में राज्य में देखो यह रूढ़ि नहीं होता परन्तु यह भी यौगिकवाद होता है उसके पश्चात् जब राजा को अपनी प्रजा में वृतियाँ नहीं रहतीं तो वह रूढ़ि बन जाती है। राज्य भी एक रूढ़ि है परन्तु देखो और भी ऊर्ध्वा में जाओगे यदि राजा यह स्वीकार कर लेता है यह मेरी प्रजा नहीं है मानो यह परमपिता परमात्मा की प्रजा है इसमें आत्मा सब में विद्यमान है, मैं भी, मेरे शरीर में भी आत्मा विद्यमान है और परमपिता परमात्मा विभु के रूप में रमण है। वह प्रभु मानो सर्वभुतेषु में रमण कर रहा है तो मेरे प्यारे! देखो राजा यौगिक शब्द बन जाएगा। यौगिक शब्द में परणित रहना चाहिए। यौगिकवाद में ही मुनिवरो! देखो सर्वस्व जगत विद्यमान रहता है। तो आओ बेटा! देखो मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा न करता हुआ केवल हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में भिन्न-भिन्न प्रकार के शब्दों की मानो प्रतिभाषितता होती रही है। तो विचार-विनिमय क्या मुनिवरो! जो मानव परमात्मा का आस्तिक बन करके परमात्मा के गुणों का यौगिकवाद से देखो उसका स्मरण करता है और उसमें मानो यौगिकवाद को ही दृष्टिपात करता है तो वह योगी बन जाता है और योगियों के गुण उसमें प्रविष्ठ हो जाते हैं।

यजमान

आओ मेरे प्यारे! आज मैं बहुत दुरी न जाता हुआ केवल विचार-विनिमय कि हमारा वैदिक साहित्य हमें किस प्रेरणा में ले जा रहा है, प्रेरित कर रहा है और प्रेरित करता वह जैसे यजमानम् ब्रह्मे यजमान भी बेटा! देखो यह रूढ़ि शब्द नहीं यौगिक शब्द है। यजमानम् ब्रह्मा यज्ञनम् ब्रहे कृतम देवाः यजमान कहते हैं जो यज्ञ में मानो देखो जो

सर्वत्र जितने शुभ क्रियाकलाप हैं जो उसका स्वामित्व करने वाला है उसका नाम यजमान है तो यौगिक शब्द बन गया और मुनिवरो! देखो वह ही शब्द केवल देखो यज्ञम् ब्रह्मा देखो वर्णे असुतम दम ब्रव्हे देखो इन **ऋषि-मुनियों ने जितने भी शब्द दिए हैं वह सब यौगिक हैं** उनमें रूढ़िवाद नहीं बनाना चाहिए रूढ़ियो में गमन करने वाला। क्योंकि जो—जैसे यज्ञ है सुगन्ध देता है तो प्रत्येक प्राणी को देता रहता है, वायु मण्डल को देता रहता है इसी प्रकार वह यौगिक शब्द बन गया।

संगतिकरण

मेरे प्यारे! देखो इसी प्रकार यज्ञम् ब्रह्मे देखो यज्ञ दानेषु और मुनिवरो! देखो देव-पूजा और संगतिकरण इन्ही मानो देखो तीनों में वह निहित रहता है। संगतिकरण कहते हैं जहाँ दानी सब एकत्रित हो करके प्रभु का चिन्तन करते हैं अथवा मनन करते हैं देवताओं को हुत देते हैं तो वह मानो देखो वह योगी बन गया है वह यौगिक शब्दों में, यौगिक क्रियाकलापों में मानो सदैव रत्त हो गया है। इदन्नमम्—वह चाहता नहीं परन्तु केवल वह देखो याज्ञिक बना हुआ है और मुनिवरो! देखो वह अमृतम् देखो वह संगतिकरण में परणित है। संगतिकरण कहते हैं जहाँ सामूहिक अपने विचारों को एक ही रसता में ला करके मानो एकोकीकरण में परणित हो जाए मन कर्म वचन से तो उसका नाम संगतिकरण कहा जाता है।

दानेषु

मुनिवरो! देखो दानेषु जहाँ द्रव्य को यह स्वीकार किया जाता है इदन्नमम्—यह द्रव्य मेरा नहीं है, यह द्रव्य प्रभु का है। मुनिवरो! देखो द्रव्य भी रूढ़ि शब्द नहीं रहा वह भी यौगिक बन गया है। मेरे प्यारे! देखो द्रव्य वह दानेषु क्योंकि दान देना मेरा कर्तव्य है। जब महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से यह प्रश्न किया गया क्या महाराज यह दानेषु शब्द आपने शतपथ ब्राह्मण में निहित किया है तो इसका क्या तारतम्य, क्या इसका अभिप्राय है? तो महर्षि याज्ञवल्क्य ने कहा क्या संसार में

देखो जो ईश्वर का आस्तिक प्राणी होता है वह कहता है इदन्नमम्—यह मेरा नहीं है परन्तु यह प्रभु का है। जो सर्वत्र देखो प्रभु यौगिक है, स्वयँ यौगिक है। तो मेरे प्यारे! देखो यह द्रव्य यह मुझे दान देना मेरा कर्तव्य है। **दान किसे कहते है?** दानाम् दानत्वा दानत्व ब्रव्हे जो दान दिया जाता हो और दिया क्या जाता है जो देवताओं को देवताओं का परख है। देखो बुद्धिमानो को जो शुभ कार्यो में, क्रियाकलापों में परणित करते हैं जो मानो जिससे वायु मण्डल पवित्र होता है, जिससे प्रदूषण समाप्त होता हो वही मानो देखो साकल्य द्रव्य को ला करके वह उसमें मेरे प्यारे! दानेषु कहलाता है। और वह दानेषु क्या वह द्रव्य है और द्रव्य कोई भी हो वह द्रव्य भी दानेषु कहा जाता है जिससे दानव प्रवृति समाप्त हो जाए और मानव प्रवृति आ जाए। तो उसको दान की संज्ञा में परणित किया जाता है।

देव-पूजा

मेरे प्यारे! देखो दानेषु संगतिकरण दानेषु और मुनिवरो! यज्ञाम् भूतम् ब्रह्मा वर्णस्सुतम् देव पूजाम् इसमें देवताओं की पूजा होती है। जैसे मुनिवरो! देखो जल को यजमान अपने में प्रोक्षण करता रहता है और मुनिवरो! देखो जल की पूजा है और मुनिवरो! देखो अग्न्याधान करता है अग्नि के मन्त्रों का उद्गीत गाता हुआ और वह उसमें साकल्य प्रदान करता है तो अग्नि की पूजा हो गई। अग्नि देवाम् भूतम् देवाम् मुखाम् ब्रह्मे मैंने कई कालों में कहा है कि यह जो अग्नि है यह देवताओं का मुख है इसके मुख में मानो जो प्रदान किया जाता है, इसके मुखारबिन्दु में जो प्रदान किया जाता है वही मेरे प्यारे! देखो देवताओं का मुख है जो देवताओं को प्राप्त होता है। अग्नि मेरे प्यारे! देखो इसको सूक्ष्म बनाती है और सूक्ष्म बना करके देखो जल का शोधन करती है। वायु इससे शोधन होता है और इसी से पृथ्वी के गर्भ में जब यह तरंगे जाती हैं तो नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थों का शुद्धिकरण हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो प्रदूषण नहीं रहता अन्तरिक्ष में उन परमाणुओं को नष्ट करता है जिसमें प्रदूषण विद्यमान हो गया है। वह तरंगे मानो देखो उससे

समाप्त होती हैं और यह पृथ्वी नाना प्रकार के व्यंजनों वाली बनती है—कहीं खनिज है, कहीं खाद्य है नाना प्रकार का रूप बनता रहता है। तो यज्ञ मेरे प्यारे! देखो यह तीन प्रकार के रूपो में रत्त रहता है देखो दानेषु, दानेषु संगतिकरणं ब्रह्मा और मुनिवरो! देखो देवान् पूजनाम् ब्रह्मा व्रतम् तो इसीलिए हम शिव की पूजा करते हैं। शिव की पूजा का अभिप्राय यह कि इसका और भी सूक्ष्मता में जाओगे तो सदुपयोग करना उसकी पूजा है।

मेरे प्यारे! देखो अग्नि को, अग्नि के ऊपर हम विचार-विनिमय करेंगे तो हम तेजस्वी बनेंगे और जल के ऊपर अन्वेषण करेंगे तो मानो देखो प्राणवर्धक बन जाएँगे। और जब मुनिवरो! पृथ्वी के ऊपर अनुसन्धान होगा तो जितना पिण्डाकार यह जगत है उन पिण्डों की प्रतिभा को आन्तरिक जगत में जानने का हम प्रयास करते रहेंगे। और वायु को जानने से, मेरे प्यारे! देखो वायु को जानने से देखो वायु में इस समय देखो ऊष्ण परमाणु भ्रमण कर रहे हैं तो यह कौन सा ऊष्ण है और कौन सा वृति है मेरे प्यारे! देखो उसका ज्ञान हो जाता है और देखो इसमें अग्नि जल के परमाणु विद्यमान हैं तो वह किस प्रकार के प्रदूषण से युक्त हैं या प्रदूषण से रहित हैं। तो मुनिवरो! देखो उनका उपयोग करना ही वह उनकी देव-पूजा कही जाती है—इनका सदुपयोग करना, इनका शुद्धिकरण करना।

आत्मिक साधना

मेरे प्यारे! देखो जैसे मानव वाणी का उपयोग करता है, वाणी का दुरुपयोग भी करता है तो वाणी का सदुपयोग करना चाहिए। सत्य उच्चारण करना चाहिए और जितनी आवश्यकता है उतना उद्गीत उच्चारण करना चाहिए। वेदमन्त्रों की प्रतिभा में सदैव रत्त रहना चाहिए तो यह वाणी की पूजा कहलाती है। और मुनिवरो! देखो नेत्रों से उतना ही आप दृष्टिपात कीजिए जितनी आपकी आवश्यकता है शरीर की पूर्ति हो जाए और उसमें अति न आ जाए। देखो, यदि अति आ जाएगी तो मानो देखो अच्छाईयों की कोई अति नहीं होती, उसकी कोई सीमा नहीं होती। एक

पुत्री को हम दृष्टिपात कर रहे हैं वह पुत्री है वही मानो आगे चल करके माता बनती है और माता से ही मानो देखो महामाता बन जाती है और वही दिव्य गुणों वाली उसको दृष्टिपात करोगे तो देवता उसमें वास कर रहे हैं, उन देवताओं का व्यवधान होने लगता है। तो मानो देखो तुम्हारे हृदय में अच्छाईयों को जब इस प्रकार गुणाधानम् करोगे तो तुम्हें कोई भी मानो देखो वृतियों में और तुम्हारा जीवन एक महानता में परणित होता रहेगा। तो वाणी का, नेत्रों का, सर्वत्र का सदुपयोग होना ही मेरे प्यारे! देखो यह आत्मिक साधना, शारीरिक साधना और देवताओं की साधना में परणित हो करके हम आत्मिक साधना में प्रवेश हो जाएँ।

अमृत को धारण करने की प्रेरणा

मेरे प्यारे! देखो आज मैं विशेष चर्चा न प्रगट करता हुआ मैं इस भयँकर वन में जाना नहीं चाहता हूँ यह तो विचारों का वन है जिसमें चला गया हूँ। विचार विनिमय केवल हमारा यह कि हम परमपिता परमात्मा का रचाया हुआ जो एक-एक वेद मन्त्र है उसके ऊपर हमारा अन्वेषण होना चाहिए। मेरे प्यारे! मैं शिव की याचना कर रहा था हे शिव तू मानो देखो मेरी अन्तरात्मा में वशीभूत हो क्यों, जिससे मेरी इन्द्रियाँ, मेरा जो अमृत देखो यह शरीर रूपी जो पिण्ड है मैं इस पिण्डाकार को जानने वाला बनूँ। यह परमपिता परमात्मा ने यह पिण्डाकार का निर्माण किया है इसे नष्ट करने का मेरा कोई अधिकार नहीं है, अधिकार होगा तो मानो देखो मेरी उग्र क्रिया बन जायेगी और उग्र क्रिया ही मानो देखो विनाश का एक मूल है और विनाश के मूल में ही मुझे ले जायेगी। तो मेरे पुत्रो! देखो इस प्रकार जब मानव अपना विचार विनिमय करता है और वेदमन्त्रों के उस ज्ञान को जो सदैव नवीन बना रहता है। बेटा! आज भी शिव की व्याख्या उसी प्रकार की है, पुरातन काल में भी इसी प्रकार की रही है। वह मानो देखो व्याख्याकार जब इस पर विचार विनिमय करते हैं तो अपने में अपनेपन का व्यवधान होने लगता है, अपने में ही वह समाहित हो जाता है। तो आओ बेटा! देखो मैं विशेष चर्चा न देता हुआ आज का हमारा वेदमन्त्र हमें क्या कह रहा

है—हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और देव की महिमा का गुणगान गाते—बेटा! आज मैंने तुम्हें बिखरे हुए पुष्पो को एकत्रित किया है क्या मानो देखो अपने जीवन में देखो अमृतम् देखो अमृत को धारण करे और विष को त्यागने का प्रयास करे। अज्ञान में सदैव अज्ञान को त्यागे और ज्ञान में प्रवेश होता रहे क्योंकि ज्ञान सदैव नवीन बना रहता है और अज्ञान की सीमा होती है और ज्ञान की कोई सीमा नहीं होती है, क्योंकि परमात्मा ज्ञानी है परमात्मा मानो देखो वेदज्ञ है इसीलिए परमात्मा के ज्ञान विज्ञान की कोई सीमा नहीं है। इसीलिए ज्ञानियों की भी कोई सीमा नहीं है। परमपिता परमात्मा मानो सु कहलाता है और सु ही रहना चाहिए।

यह है बेटा! आज का वाक्। आज के वाक् उच्चारण करने का हमारा अभिप्रायः यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और देव की महिमा का गुणगान गाते हुए हम देखो अपने में शिवत्रा, देखो शिव में परणित हो जाएँ। यह है बेटा! आज का वाक्।

आज के वाक् उच्चारण करने का हमारा अभिप्राय यह है कि हम परमपिता परमात्मा जो शिव है, जो सदैव हमारे कल्याण के लिए जिसने संसार को रचा है, इसका संघार करता है समय-समय पर मानो देखो अमृतियाँ होती रहती हैं **उस परमात्मा की हमें उपासना करनी चाहिए क्योंकि यह हमारा सर्वत्रता में विद्यमान है।** तो यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा तो मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। आज का वाक् समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन।

ओ३म् देवाः आभ्याम् रथम् माऽम् प्राची गतम् माऽम् आपाहाम्।
ओ३म् देवम् भविता मानाऽम्।।

दिनाँक : 30 जुलाई, 1992
समय : प्रातः 10 बजे
स्थान : ग्राम दूधाहेड़ी
मुजफ्फरनगर

।। ओ३म् ।।

योग द्वारा आत्मा का विश्व भ्रमण

जीते रहो!

देखो मुनिवरो ! अभी-अभी हमारा पर्ययण समय समाप्त हुआ। आज हम तुम्हारे समक्ष वेदों का मनोहर गान गा रहे थे, उस प्रभु का ऊँचे स्वरों से गुणगान गा रहे थे जिस विश्वकर्मा ने नाना प्रकार से इस सृष्टिक्रम को चला रखा है।

मुनिवरो ! कल हम एक ऊँचा गम्भीर विषय इस महान् समाज में प्रस्तुत कर रहे थे उसको जानने के लिए मानव को बहुत तीव्र बुद्धि की आवश्यकता है।

आज वेदमन्त्रों में सबसे पूर्व उस प्रभु इन्द्र की याचना कर रहे थे जो वृष्टि कराने वाला है, इस संसार को नियन्त्रण में कर रहा है, इतने बड़े राष्ट्र का स्वामी है, महान है, पवित्र है और निर्द्वन्द्व है। वह प्रभु इस संसार को रचा रहा है और वह कार्य कर रहा है जो कार्य मानव नहीं कर सकता।

मुनिवरो ! आत्मा इस शरीर में आकर बौद्धिक और नाना प्रकार के पाप किया करता है जिन्हें राजा जान पाता परन्तु वह विधाता इस आत्मा के समक्ष बैठा सब कुछ देख रहा है और अन्त में हमारे पाप-पुण्य कर्मों का फल देता है। वह प्रभु इस आत्मा का साथी है और इस संसार की चित्रकारी को बना रहा है।

मुनिवरो ! कल हमारे महानन्द जी ने नाना प्रकार के प्रश्न प्रस्तुत किए परन्तु हम इस सम्बन्ध में अधिक न कहेंगे, केवल इतना ही उच्चारण करना है कि आज हमारा वैदिक विचार क्या कह रहा था, हमारा आत्मिक विज्ञान क्या कह रहा था, हमारे ऋषियों की वह मोक्ष वाणी संसार के लिए क्या कह रही थी? कल हमने उच्चारण किया कि

जो मानव संसार से ऊँचे शिखर पर चला जाता है, पवित्र बन जाता है वह शान्त हो करके महान् आदेशों को जानने वाला बन जाता है इसलिए आज हमें बहुत ऊँचे बनने की आवश्यकता है, बेटा ! हम नित्य-प्रति यही व्याख्यान दिया करते हैं। आज हम लोमश मुनि जी से प्रार्थना करेंगे कि वह अपनी विचारधारा इस महान् समाज में प्रगट करें, इससे हमारी आत्माओं में शान्ति प्राप्त होगी, हमारा महान् समाज पवित्र बनेगा।

मुनिवरो ! अब हम शान्त होने जा रहे है इतना और कहते चले जाएं कि मानव को ऊँचा जाने के लिए बहुत परिश्रम की आवश्यकता है, बहुत कर्म करने की आवश्यकता है। आज लोमश मुनि जो कुछ आधुनिक काल और कुछ और कालों का विवरण तुम्हारे समक्ष नियुक्त करेंगे और तुम्हें प्रतीत हो जाएगा कि आज मानव कितना तुच्छ बन चुका है। अब हम शान्त होने जा रहे हैं, लोमश मुनि से प्रार्थना है कि वह अपनी विचारधाराएँ प्रगट करें।

पूज्य महर्षि लोमश मुनि जी के उद्गार

धन्य हो।

"तत् स्वरूपा भौति। तत् स्वरूपा भवति ब्रह्माञ्चे नमो अस्ति। ब्रह्मा यदा नमस्तम्। धारणम् भवति अस्ति।"

हे भद्र प्राणियों! हे भद्र पुरुषों! हे भद्र मेरे महान् समाज! हमें ऐसा अवसर किसी-किसी काल में प्राप्त होता है, मेरे गुरु ने मुझे आदेश दिया और कहा कि लोमश मुनि अपनी कुछ वार्ता इस समाज में नियुक्त करें परन्तु मैं इतना ऊँचा नहीं जितनी मेरे गुरु ने मुझे मान्यता दी है मेरी बहुत सूक्ष्म सी तुच्छ बुद्धि है, उस बुद्धि से गुरु जी के आदेशों का पालन करना हमारा कर्त्तव्य है। आज हम उन विचारों को प्रस्तुत करेंगे जो आधुनिक समाज के लिए लाभदायक होंगे, गुरुजी तो नित्यप्रति महान् और गम्भीर विषयों पर पहुँच जाते हैं जो हमारे लिए बड़े उपयोगी हैं, जिनको जानने के लिए मानव के जीवन के जीवन समाप्त हो जाते हैं तब भी वह पदार्थ

उसके आंगन में नहीं आता। आज गुरुजी की परम कृपा से हमें उनका एक आदेश मिला, उसी आदेश से हम अपनी विचारधारा प्रगट कर रहे हैं।

सबसे पूर्व हम उस विधाता का गुणगान गायें जो विधाता हमारी वाणी का, श्रोत्रों का, चक्षुओं का, त्वचा का, भुजों का, उपस्थ इन्द्रियों का, पदों का सबका महान् पिता है। आज सबसे पूर्व विधाता से इन सबमें बल माँगने की इच्छा करें, यह मानव की सर्वप्रथम श्रेणी है। परन्तु बल कैसे आएगा, आज मानव इसी को नहीं जान रहा है, गुरुजी तो सब वार्ताओं को उच्चारण कर चुके हैं, उनका वाक्य ऐसा है जो प्रत्येक मानव, प्रत्येक देवकन्या के हृदय में स्थान किए जा रहा है। हम इतने योग्य तो नहीं जो उनके सदृश अपने विचार प्रगट कर सकें परन्तु आज हम गुरुजी के आदेश को लेकर उस विधाता की याचना कर रहे हैं जो प्रत्येक मानव के हृदय में विराजमान है और हमारी सब इन्द्रियों का साक्षी है।

आज का मानव समाज यह नहीं जान रहा है कि मैं कौन हूँ? क्या मेरा कर्त्तव्य है? क्या मुझे करना है? किसलिए मैं आया हूँ? परन्तु इस विषय में अधिक न कहेंगे।

महाराज कृष्ण और श्री राम

गुरुजी ने तुम्हारे समक्ष महाराज कृष्ण के विशेषण में बहुत कुछ कहा होगा, महाराज राम के विषय में बहुत कुछ कहा होगा परन्तु हम गुरुजी के आदेशानुकूल एक विशेष वाक्य उच्चारण कर देवें कि **महाराजा कृष्ण महान् परम योगी थे, जिन्होंने प्रभु की महत्ता को जाना, हमें उनके दर्शन करने का सौभाग्य मिला।** आज के मानव को महाराजा कृष्ण के जीवन पर विचार लगा लेना चाहिए कि वह कितने परम योगी थे और उनका जीवन कितना महत्त्वदायक था। परन्तु आधुनिक काल के व्यक्तियों ने, मेरी प्यारी माताओं ने उस महान् कृष्ण को भगवान् कह करके संसार में उनका कोई मूल्य न छोड़ा।

महाराजा कृष्ण को भगवान् कहें तो कौन सी दृष्टि से भगवान् कहें? कौनसा कथन ऐसा है जिससे आज महाराजा कृष्ण को भगवान् की उपाधि प्राप्त करा देवे? यह कह सकते हैं जैसे हम अपने गुरु को

भगवान् कह दिया करते हैं इसका कोई ऐसा वाक्य नहीं अवश्य कह लेना चाहिए परन्तु आज हम उन महान् आत्माओं को इतनी महानता देते हैं कि उनकी वास्तविकता को खो बैठते हैं, जब उन व्यक्तियों की वास्तविकता चली जाती है तो संसार में अन्धकार आ जाता है, वास्तविकता को अवश्य विचारना चाहिए।

आज मानव कहता चला जा रहा है कि महाराजा कृष्ण 'भगवान्' परन्तु क्या मान बैठे कि महाराजा कृष्ण की सोलह हजार रानियाँ थीं, मूल्य खो बैठे उस विधाता का, उस महान् योगी की वास्तविकता खो करके संसार में अपने स्वार्थ को पूरा करने लगे, आज यह मानव नहीं, यह कैसा समाज बन गया। आज के संसार को देखकर खेद आ रहा है, **गुरुजी तो कुछ देख नहीं रहे, उनका तो आपत्ति काल है** जिसके कारण वह आधुनिक संसार के विशेषण में कोई आदेश नहीं दे सकते, केवल सुनी हुई वार्ताओं का विश्लेषण कर सकते हैं, उसमें कुछ प्रकाश दे सकते हैं। इस सम्बन्ध में कोई अच्छी प्रकार जानकारी नहीं। हम अपनी आत्मा में सब कुछ जान बैठे हैं।

क्या करें, है तो यह अभिमान का वाक्य परन्तु अपनी विद्या पर मानव को गौरव आता है, अपनी मानव जाति पर गौरव आता है, गुरुजी तो कहा करते हैं कि जो गौरव का शब्द कहता है वह अभिमानी कहा जाता है परन्तु **गुरुजी तो यौगिक वाक्य कहा करते हैं,** एक गौरव का शब्द भी है यदि मानव को अपनी विद्या का, वेद की विद्या का गौरव होता है तो मानव का जीवन एक काल में ऊँचा बन जाता है। **जिस काल में हम महाराजा राम को, महाराजा कृष्ण को परमपिता परमात्मा के रूप में मान बैठे, उस काल में उनकी महत्ता समाप्त हो गई, आज हमें उनका महत्त्व समाप्त नहीं करना है।**

आज संसार की कहाँ तक विहीनता का वर्णन करें, एक काल में मेरे विधाता महानन्द ने कहा कि महाभारत के पश्चात् जब से कलियुग आया **यहाँ एक महाराजा बुद्ध नाम के ऋषि आए** और उनको भी यहाँ अवतार मान बैठे जिन्हें वेदों का पूर्णतया ज्ञान न था परन्तु उन्हें ज्ञान था "अहिंसा परमो धर्मः" का जिसको लेकर वह चले

और संसार का पुनः उत्थान कर दिया। आज हम उन महान् व्यक्तियों को महान् ही मानें तो उनकी वास्तविकता है। उन महान् आत्माओं ने यह भी कहा कि परमात्मा ने तो यह संसार रचा ही नहीं, अनादि से चला आ रहा है तो क्या आज हम उनको अवतार मान बैठे? अपना भगवान् मान बैठें जिन्होंने परमात्मा के ऊँचे स्वरूप को, उन महान् विश्वकर्मा की अचिन्ता को अच्छी प्रकार जाना नहीं, हम यह नहीं कहते कि कुछ नहीं जाना, बहुत कुछ जाना, इस अन्धकार के संसार को प्रकाश देकर चले गये, यह अवश्य कहेंगे परन्तु यह नहीं कह सकते कि वह परमात्मा का अवतार बनकर आ गया, इसको कोई भी महान् आत्मा, कोई भी योगी कदापि भी स्वीकार नहीं करेगा।

आज हम उन महान् आत्माओं को महानूता देवें तो कैसी महानता देवें कि उनके जीवन पर अपनी दृष्टि पहुँचायें, उनके जीवन का जितना अमूल्य रहस्य है वह हमारे अन्तःकरण में समा जाये। आज हम भी सोलह कलाओं को जानने वाले महान् और पवित्र बन जायेंगे, एक-दूसरे के लिए सेवा के लिए नियुक्त हो जायेंगे।

आज संसार यह कहता है कि महाराजा कृष्ण को भगवान् मानें तो अवश्य मानना चाहिए परन्तु यह नहीं माना जायेगा कि परमात्मा मान लिया जाये। आज यदि उन्हीं को भगवान् कहते हैं जिन्होंने पितामह भीष्म को छल और नीति से शान्त किया, इसके पश्चात् और भी द्रोणाचार्य आदियों को भी छल से, इस महाभारत के संग्राम को कराया, अरे? क्या इसी को भगवान् का युद्ध कराया हुआ कहोगे? क्या यह ही परमात्मा का कराया हुआ युद्ध है?

मेरे विधाता महानन्द जी कहा करते हैं कि और किसने कराया परन्तु हमने कहा कि आज वार्ता देने वाले गुरु जी नहीं आज कह रहे हैं कि यह नीति थी, महाराजा कृष्ण उस अन्धकार में उस वैज्ञानिक संग्राम कराने में इतने पूर्ण थे कि जैसा समय होता वैसा वह **धर्म नीति** के अनुकूल कार्य करते, उसी को संसार में महान् कहा करते हैं, उनको महानता अवश्य देनी चाहिए।

इसी प्रकार राम को देखा, राम के जीवन की घटना को सुना, कितना महान् परम आत्मा, ऋषि आत्मा, सूर्य मण्डलों वाली आत्मा, जिन्होंने यहाँ आकर पुनः उत्थान कर दिया, राजा रावण के उस महान् अभिमान को चूर किया और मर्यादा को बाँधकर चले गये।

आज का मानव क्या कह रहा है कि जब महाराजा रावण की बहिन सोमतिति उनके समक्ष आई और अपनी इच्छायें प्रगट कीं तो राम ने उस काल लक्ष्मण को आज्ञा दी कि इसके नाक कानों को स्पष्ट किया जावे। लक्ष्मण ने अपने विधाता की आज्ञा पा करके उसके नाक कान काट लिये, क्या आज वह ही तुम्हारा भगवान् है जो देवकन्या पर शस्त्र चलाये, जो क्षत्रिय का भी कर्त्तव्य नहीं। आज का मानव इतनी महानता पर जा पहुँचा है कि उनकी वास्तविकता को खोकर उनको गड्ढे में गिरा दिया है। यह मान लिया जावे कि कोई देवकन्या उनके समक्ष आई, उसने अपनी इच्छायें प्रगट कीं परन्तु उसको कटु शब्द उच्चारण किये वो उसकी (स्थिति) तो नाक कान कटने के तुल्य ही हो जाती है। जैसे आज मेरे समक्ष मेरे विधाता महानन्द जी आये, इन्होंने अपनी दुर्भावनाएँ प्रगट कीं और हम उन शब्दों से उनके समक्ष आयें जिनसे इनको लज्जा आ गई मानो लज्जा आना ही नाक का कट जाना है। आज मानव को यह क्यों नहीं विचार लेना चाहिये, उन वाक्यों को उसी प्रकार मान लेना चाहिये जो वास्तविकता थी।

आज का मानव कहता है कि वास्तविकता तो हमारे समक्ष नहीं, परन्तु समक्ष है, तुम अन्धकार में जा करके रूढ़ियों में जा करके उस सूक्ष्मता को नहीं त्यागते जो त्यागने योग्य है। आधुनिक काल की लेखनी कुछ कह रही है और पूर्व का वाक्य कुछ और कह रहा है, आज आंगन में नहीं आ रहा। इसका सबसे मूल कारण है कि तुम रूढ़िवाद से मान रहे हो कि किसी महान् ने ऐसी लेखनी दी है, वह मिथ्या नहीं थे, उसकी रूप रेखा अच्छी प्रकार नहीं जान रहे हैं और इसलिये उन महान् आत्माओं की महानता त्याग करके आज बहुत तुच्छ बन गये हैं। भगवान् राम ने, भगवान् कृष्ण ने अपने जीवन को बहुत कुछ जाना।

गुरुदेव ने तो निर्णय कराया होगा परन्तु मेरी भी एक तुच्छ बुद्धि है, मैं भी अपनी विचारधाराओं को प्रगट कर रहा हूँ। महाराजा कृष्ण ने महाभारत का संग्राम कराया, यदि उस काल में वह न होते तो न प्रतीत यह संसार न होता क्योंकि जब यह संग्राम हुआ उस समय यहाँ ऐसे यन्त्र स्थिर हो गये थे जिनको वायु मण्डल में प्रहार करने से यह सर्वज्ञ संसार समाप्त हो जाता। परन्तु महाराजा कृष्ण ने उन वैज्ञानिक रेखा को जाना जिनसे उन महान् परमाणुओं का प्रभाव उस रेखा से बाहर न जा सके, वह रेखा शान्त करती रही, उस रेखा को उस परम योगी ने जाना। आज हमें महानता देनी है तो इन वाक्यों में देनी चाहिये और उनके जीवन पर इस प्रकार दृष्टि पहुँचनी चाहिये। महाराजा कृष्ण का जन्म दिवस निकट आता चला जा रहा है, हम गुरु जी से निवेदन करेंगे कि उनके जन्म दिवस पर उनके जीवन विषय में व्याख्यान दें। वास्तव में तो गुरु जी इतने महान् हैं कि वह पूर्व ही समय को विचार लेते हैं कि आज कौन सा व्याख्यान देना है जिससे मानव का हृदय उन्हीं व्याख्यानों से पुलकित हो जाये। हम इस विशेषण में अधिक न कहेंगे केवल इतना उच्चारण करना है कि यदि महाराजा राम को महानता देनी है तो उनके पराक्रम को महानता दें। आज यह क्या महानता कि महाराज कृष्ण के सोलह हजार रानियाँ थीं, महाराजा कृष्ण शिशुपाल से संग्राम करके महारानी रुक्मिणि को ले आये और उनके परिवार का कोई भी उनके इस कर्त्तव्य से सहमत नहीं था। यह तो ऐसी महानता दे दी जैसे आधुनिक काल में **इस महान् ऋषि भूमि पर जहाँ हमारी यह आकाशवाणी गुरु जी के शरीर द्वारा मृत मण्डल में जा रही है**—इस पवित्र भूमि पर यवनों का राज्य रहा और यवनों ने इसी प्रकार मनमाने कार्य किये, मेरी प्यारी माताओं को नाना प्रकार के कष्ट दिये और संसार को गड्ढे में पहुँचाया।

महाभारत के पश्चात्

महाभारत संग्राम के पश्चात् यहाँ क्षत्रिय समाप्त होते चले गये, यवनों का राज्य आ गया। यवनों के राष्ट्र ने संसार को अन्धकार में पहुँचा दिया, शिक्षा का एक अंकुर भी नहीं पाया। आज इस संसार के

बुद्धिमानों पर खेद है, यह संसार कहाँ गया कौन सी सुषुप्ति में चला गया। आज यवनों का राज्य भी समाप्त हुआ, आज भी हम देख रहे हैं, गुरु जी तो देखते नहीं। मेरे विधाता महानन्द जी देखा करते हैं, इनके भाव (से) प्रगट होता है कि आज का संसार यह नहीं मान रहा है। ऋषियों के गौरव को हमने जानना है, कितने खेद का वाक्य है। हमें ऋषियों के गौरव को, माताओं के गौरव को, जिन माताओं ने महाराजा कृष्ण को, महाराजा राम को, महाराजा बुद्ध को, महाराजा कोपात्री आदियों को जन्म दिया, आज हमें उन माताओं के गौरव को, उन माताओं के गर्भाशय को ऊँचा बनाना है। आज हम यह विचार रहे हैं कि आज जैसा दुर्भाग्य मानव का कदापि न होगा। आज हमें मातृभूमि को ऊँचा बनाने के लिए बहुत कुछ जानना है।

गुरुजी का तो यह आदेश नहीं था कि इतने व्याख्यान प्रारम्भ किए जाएँ, आज हमारा अमूल्य आदेश यह था कि **आज हमें महान् आत्माओं के गौरव को जानना है,** समय आगे बढ़ता चला जा रहा है, भौतिक विज्ञान प्रगतिशील बनता चला जा रहा है परन्तु **अभी यह विज्ञान द्वापरकाल के विज्ञान का आधा भी नहीं पहुँचा है।**

अनुमान

एक समय मेरे विधाता महानन्द जी ने कहा कि आधुनिक काल में कुछ व्यक्ति ऐसा कहते हैं कि जैसे महाराजा राम, महाराजा कृष्ण और भी नानाएँ जैसे वामन, मच्छ आदि अवतार हुए इसी प्रकार इस कलियुग में निष्कलंक अवतार हुए, इसी प्रकार इस कलियुग में निष्कलंक अवतार आने वाले हैं। परन्तु यह वाक्य यथार्थ हो जाएगा और कैसे हो जाएगा कि कोई न कोई ऐसा वैज्ञानिक अवश्य उत्पन्न हो जाएगा जो महाभारत जैसे वैज्ञानिक संग्राम के लिए उन यान्त्रिक रेखाओं को जानेगा जो महाराजा कृष्ण ने और त्रेता में लक्ष्मण ने जाना। हमारा यह अनुमान है कि जब तक भौतिक विज्ञान का विश्व संग्राम न होगा जब तक कोई ऐसी आत्मा उत्पन्न न होगी। आज मानव कहता है कि यह महान् आत्मा कहाँ उत्पन्न होगी, कैसी होगी, तो वह तो क्या उच्चारण करेंगे, न प्रतीत कौन आत्मा कहाँ पुनः उत्थान होकर आ जाये।

यह हमारा निश्चय नहीं परन्तु ऐसा अनुमान है। देखो महर्षि वशिष्ठ ने महाराज राम का राजतिलक दिवस नियुक्त कर दिया परन्तु वह तो शान्त हो गया और राम को वन हो गया। इसी प्रकार मनुष्य के अनुमान होते हैं, अनुमान के आधारों से मानव चलता है, अनुमान से ही संसार चल रहा है, ऐसे ही आज हम अनुमान लगा रहे हैं यह तो प्रभु जाने कि इसमें क्या होगा।

मैंने गुरुजी की परम कृपा से, परमपिता परमात्मा की महान् दया से यह जाना कि आधुनिक काल के व्यक्ति आज चन्द्रमा की परिक्रमा करने जा रहे हैं, यह भौतिकता में अच्छी ही वार्ता है। हम नहीं कहते कि यह मानव को अनुमान नहीं करना चाहिये परन्तु आज का वैज्ञानिक यह कह रहा है कि पूर्व में इस विज्ञान को किसी ने नहीं जाना, मेरे विधाता महानन्द जी ने ऐसा कहा। परन्तु आज के मानव की यह महान् भूल है, उसने पूर्व संसार के इतिहासों का स्वाध्याय नहीं किया, राजा रावण के पुत्र नरान्तक ने त्रेता काल में इन यन्त्रों को बनाया, द्वापर काल में भीम के पुत्र घटोत्कच तक ने चन्द्रमा में जाने वाले यन्त्रों को खोजा। मेरे एक परम शिष्य जिनको **महर्षि उदांगनी** कहा जाता है उन्होंने अपने शरीर के वास्तविक तत्त्वों को जाना और चन्द्रमा की परिक्रमा की, मैंने भी गुरुजी की परम कृपा से यह जाना कि जब यह मन इस पार्थिव शरीर में रहता है तो इसकी कैसी गति रहती है, वेदों का स्वाध्याय किया और मन की गति को जाना।

आत्मा का उत्थान

मन की गति को अन्तःकरण में नियुक्त करते हुए जैसा गुरुजी कल नियुक्त कर रहे थे इस अन्तःकरण का एक यन्त्र बनाया, इस स्थूल, कारण और सूक्ष्म शरीर को जाना, **जितनी चित्तवृत्तियाँ हैं उन सबको एकाग्र कर अन्तःकरण का यन्त्र बन जाता है और मन अन्तःकरण में विराजमान हो जाता है, इस शरीर से उत्थान होता है,** वायु मण्डल में, सूर्य मण्डलों में, विचरण किया करता है। अब वाक्य रह जाता है कि यह योगी कैसे जान लेता है? जब इन पांचों प्राणों को प्राण,

अपान, उदान, समान और व्यान की एक सन्धि बन जाती है तो सन्धि बन करके मूलाधार से इस आत्मा का उत्थान होता है, आगे नाभि चक्र में जाता है, जब यह मूलाधार में जाता है तो आत्मा अपने पार्थिवता के सम्बन्ध को धीरे-धीरे त्यागता है। उसके पश्चात् वायु का वेग अधिक रहता है क्योंकि अपान उसके द्वारा है प्राण भी परन्तु पार्थिवता उसको अधिक अपने द्वारा अर्पण किया करती है। परन्तु योगी जब इस पर अधिक परिश्रम करता है, तो चित्त की वृत्तियों को एकाग्र करके आत्मा प्राणों के सहित आगे चलता है नाभि चक्र में, यहाँ एक ऐसी विसंग रूप रेखा आती है जिसको जानकर यह आत्मा जान लेता है कि अब तू उस वायु के वेग में जा रहा है, बड़ा भयानक प्रतीत होने लगता है। परन्तु योगी को इस नाभि चक्र से ऊपर पहुँचना है जहाँ वायु का बड़ा वेग है और जल के तत्त्व अधिक लिए हुए है उस समय शरीर से एक विलक्षणता उत्पन्न होती है। उसके पश्चात् आगे हृदय चक्र आया तो हृदय और नाभि के मध्य में जो वायु का वेग अधिक था और जल के परमाणु थे वह शान्त होने लगे, हृदय चक्र में वायु अग्नि के तत्त्व अधिक लिए होती है, उस समय इस आत्मा का प्राणों के सहित और तन्मात्राओं सहित बहुत हल्का रूप बन जाता है, एक महान् सूक्ष्म रूप बन जाता है।

सूक्ष्म रूप बनकर जब यह कण्ठ चक्र में जाता है तो उसके पश्चात् प्रतीत होता है कि आज तू उस आंगन में आ गया है जहाँ वायु का वेग बहुत ही सूक्ष्म है और आत्मा वहाँ भ्रमण कर रहा है। आगे चल करके जब यह आत्मा ध्राण चक्र में जाता है तो योगी को प्रतीत देता है कि अब तू उस स्थल में आ गया है जहाँ चन्द्रमा अपनी कान्ति दे रहे हैं, ऐसा प्रतीत होने लगता है जैसे चन्द्रमा और सूर्य के मध्य में परिक्रमा कर रहा है। उसके पश्चात् उस योगी का आत्मा उस त्रिवेणी स्थान में जाता है और ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि पृथ्वी, चन्द्रमा और सूर्य की सन्धि होने के लिए जा रही है।

आगे चल करके यह आत्मा जब ब्रह्मरन्ध्र में जाता है तो यह सब कुछ तुच्छ बन जाता है और इस आत्मा को एक महान् प्रकाश

मिल जाता है और एक मग्नता आती है और परमात्मा की महान् सृष्टि को जानने वाला बन जाता है।

इसके पश्चात् जब कुण्डली मूलाधार में रमण करता है तो आत्मा की रूप रेखा बहुत सूक्ष्म बन जाती है और सूक्ष्म बन जाने के कारण वहाँ जिसको रीढ़ कहते हैं, जिसकी ''भूर्भुवः निरक्षणी रूपकम्'' ऐसा योगियों ने इसकी रूप रेखा निर्णय दी है कि वहाँ प्रकृति मण्डल, मन का मण्डल, ब्रह्म का मण्डल और महान् इन सब तन्मात्राओं का सबका मण्डल होता है उसके पश्चात् आत्मा का सूक्ष्म रूप बन करके यह महान् आत्मा निर्लेप हो करके परमात्मा के दर्शन कर लेता है।

जब योगी इतनी जानकारी कर लेता है तो योगी में वह महत्त्वता आ जाती है कि स्थूल शरीर को जब इच्छा हुई त्यागा और लोक लोकान्तरों में आत्मा भ्रमण करने लगता है हमने इस गति को जानने के पश्चात् ही यह निर्णय दिया है।

हमारे समक्ष प्रश्न आता है और महानन्द जी अभी-अभी प्रश्न कर लें तो इसमें ऐसा कोई सन्देह नहीं कि जब परमात्मा के दर्शन वाणी का विषय ही नहीं तो आपने कैसे उच्चारण कर दिया, परन्तु यौगिक क्रियाओं को अनुभव से जाना जाता है, उसका अनुमान लगा सकते हैं, परन्तु जिस समय यह आत्मा परमात्मा में रमण कर लेता है और आनन्द ही आनन्द भोगता रहता है उस समय उस आनन्द को उच्चारण नहीं कर सकता यह आत्मा, यह अवश्य है।

आत्मिक शान्ति

हमारा जो गौरव का शब्दार्थ था कि यदि चन्द्रमा की परिक्रमा भी करें तो अच्छी ही वार्ता है, वेद की इस महानता को जाने परन्तु आज हम देख रहे हैं कि मानव चन्द्रमा की परिक्रमा भी कर रहा है, नाना प्रकार के विमान भी बनाये जा रहे हैं, परन्तु संसार को आत्मिक शान्ति प्राप्त नहीं हो रही है। **हमारा तो गौरव है कि हमारी संस्कृति सबको शान्ति देने वाली है,** आत्मा में वह भाव उत्पन्न करने वाली

है जिससे मातृभूमि राष्ट्र की वह संस्कृति बन जाती है और राष्ट्र में वास्तविक शान्ति प्राप्त हो जाती है, ऐसा वैदिक विचार रहा है।

आधुनिक काल का राष्ट्र द्वितीय राष्ट्रों की संस्कृति और उनकी वार्ताओं को समक्ष ले रहे हैं और विचार लगाये चले जा रहे हैं कि हमें उनके आधार से चलना है। उनका यह वाक्य यथार्थ भी है क्योंकि हमारा आत्मा इतना निर्बल बन चुका है कि हमें अपनी संस्कृति को अपनाते हुए भय प्रतीत दे रहा है और भय हमारी आत्माओं का है। आज हमारी संस्कृति का अंकुर बहुत सूक्ष्म रह रहा है उसको अपनाने के लिए हम प्रयत्न नहीं कर रहे हैं, दूसरे राष्ट्रों की वार्ताओं पर बल देना चाहते हैं। परन्तु कोई काल ऐसा था, रघु का राष्ट्र हमने देखा, सर्वत्र संसार में संस्कृति फैली हुई थी, भिन्न-भिन्न राष्ट्रों में वेदों का प्रसार होता था, उस काल को देखते हुए आज हम अपने गौरव की कोई वार्ता उच्चारण नहीं कर सकते। आज के मानव को कुछ यवनों का भय है कुछ महान् उन व्यक्तियों का भय है जिनके द्वारा नाना प्रकार से हमारा जीवन पलता है, भय होने के कारण आज हमारा आत्मा, हमारा मन, हमारा अन्तःकरण उन समस्याओं को पूर्ण नहीं कर रहा है। मानव अपनी संस्कृति को खो बैठा है और अपने हृदय में यह माने बैठा है कि यह अपनी संस्कृति क्या शक्ति है दूसरे राष्ट्रों की वार्ता समक्ष होगी तो वैज्ञानिक तो बनेंगे। परन्तु मानव ने यह नहीं जाना, आधुनिक काल के राष्ट्रों ने यह नहीं जाना कि अरे ! जो संस्कृति आई है, जो विज्ञान आया है वह कहाँ से आया है, कौन सी वह निधि है।

वह निधि महान् वेदों में, उपनिषद में नाना ऋषि महर्षियों के प्रकरणों में एक-एक शब्दार्थ ज्ञान और विज्ञान से छिपा हुआ है, उस ज्ञान विज्ञान को जानने के लिए प्रयत्नशील नहीं हो रहे हैं। हम प्रयत्न कहाँ से करें, खोई हुई वार्ता कहाँ से ले आयें, आज वह वार्ता खो गई है, वह विज्ञान हमसे दूर चला गया है, क्या करें यवनों ने ऐसा किया।

पूज्यपाद गुरुदेव की प्रवचन प्रक्रिया

गुरुदेव ! हमने इस संसार को अपने सूक्ष्म शरीर द्वारा बहुत कुछ

देखा है, जहाँ आपका मृतलोकीय शरीर है, जहाँ यह आकाशवाणी जा रही है वहाँ आज का मानव भ्रान्तिदायक हो रहा है, गुरु जी के शरीर को ब्रह्मचारी रूपों से पुकारा जाता है और भ्रान्ति में लगा हुआ है कि ब्रह्मचारी जी की यह वार्तायें कहाँ से आती है, यह भी महान् संस्कृति का गौरव है।

गुरुजी के शरीर की व्याख्या हम नहीं दे सकते परन्तु आज यह अवश्य है कि **गुरुजी के यौगिक आदेश के अनुकूल आत्माओं का पुनः उत्थान हुआ, अन्तरिक्ष मण्डलों में सूक्ष्म शरीर वाली आत्माओं से सम्बन्ध हुआ और व्याख्यान प्रारम्भ हो गये।** यह जाना कैसे जावेगा? आज यह मानव तार्किक बुद्धि से जानना चाहता है, विज्ञान से जानना चाहता है, महान् अपनी तुच्छ बुद्धि से जानना चाहता है जिस बुद्धि से सांसारिक व्यवहार कर रहे हैं तो इस बुद्धि से यह वाक्य नहीं जाना जायेगा, यह यौगिक विषय तभी जाना जायेगा जब हम चन्द्रलोक में, सूर्य लोक में, बृहस्पति लोक में और नाना लोकों में बिना यन्त्रों के भ्रमण करेंगे, यह विषय उस काल का है, आज का मानव इस काल में जानना चाहता है कदापि नहीं जाना जायेगा।

आज का मानव यह भी कह रहा है कि यदि आत्मा-परमात्मा और प्रकृति यह तीनों पदार्थ अनादि हैं तो हम यह जानें कि आत्मा कितनी हैं, आत्माओं की क्या गणना है? परन्तु यह विषय तो बहुत अनुसन्धान का है। परमात्मा की अनन्त सृष्टि है, अनन्त लोक-लोकान्तर हैं, इनकी कौन कहाँ तक गणना कर सकता है परन्तु गुरुजी किसी अवसर पर समय देंगे तो किसी काल में देखेंगे। वास्तव में गुरुजी कहा करते हैं कि यहाँ आ करके आत्मा और मानव के विचार शान्त हो जाते हैं यह वाक्य यथार्थ है, ऐसा कह दिया जाए क्योंकि यह वाक्य एक महान् यौगिक विषय है, जो महान् परमात्मा के आंगन में जा पहुँचा हो उनका विषय है जैसे राष्ट्र के कर्मचारी अपने राष्ट्र की गणना को जान लेते हैं ऐसे ही हम भी परमात्मा के पूर्ण राष्ट्र में पहुँचे नहीं परन्तु प्रयत्न करेंगे कि परमात्मा के कुछ लोकों की गणना अवश्य ही कर देवें, अनुसन्धान करेंगे इस विषय में।

पूज्यपाद गुरुदेव — ''धन्यवाद !''

हम उच्चारण कर रहे थे गुरुजी के कुछ वाक्य, **गुरुजी का पुर्नात्मा (पुण्य आत्मा) इन सूक्ष्म शरीर वाली आत्माओं में आ पहुँचा और पूर्व की भाँति वही शिक्षा हमें प्रदान करके चले जाते हैं।** आज हमें इसका भी बड़ा खेद है कि गुरुजी का कोई दुर्भाग्य है परन्तु हमारे मुखारबिन्द से यह शोभा नहीं देता कि आज हम गुरुजी का दुर्भाग्य कहें क्योंकि गुरुओं का कभी दुर्भाग्य नहीं हुआ करता। आज के इस महान् स्वार्थी संसार को जानकर बड़ा आश्चर्य आ रहा है कि विधाता ने गुरु के उन तुच्छ कर्मों ने ऐसे काल में उन्हें जन्म प्रस्तुत किया परन्तु खेद होने से क्या होता है? मानव जो कर्म करता है वह भोगना ही अनिवार्य है।

आज का मानव तो कह रहा है कि राम-राम किया और पाप समाप्त हो गए, राधा-कृष्ण राधा-कृष्ण कहा पाप समाप्त हो गए। परन्तु आज मानव को विचारना चाहिए कि जिस महान् आत्मा ने अपने सौ-सौ वर्ष वेद में, स्वाध्याय में लगाए और उसका सूक्ष्मसा तुच्छ कर्म आया तो आज यह गति बन गई।

शान्ति के लिए संस्कृति को अपनायें

आज मानव को विचार लगा लेना चाहिए कि ऊँचा बनने से ऊँचे बनेंगे, जब तक मन की गतियों को नहीं जाना जाएगा, अपनी मानवता पर दृष्टि नहीं पहुँचाई जाएगी, अपने आहार व्यवहारों को सबको नहीं विचारेंगे मानव के आत्मा में शान्ति प्राप्त न होगी, मानव जो कर्म करता है वह भोगना ही पड़ता है। शान्ति के लिए मानव को स्वच्छ आहार, स्वच्छ व्यवहार और नाना बौद्धिक पापों से बचने का प्रयत्न करना चाहिए, यह मानव के चलने के लिए प्रथम श्रेणी है।

महानन्द जी ने जैसा कहा कि आज का मानव आहार और व्यवहारों पर दृष्टि नहीं पहुँचा रहा है और तब ही यह संसार अधोगति वाला बन गया है और इसे शान्ति मिलनी महान् दुर्लभ हो रही है।

यह हमारा एक बुद्धिदायक आदेश था, हमारी जितनी तुच्छ बुद्धि थी उतना हमने आदेश दिया अब हम गुरुजी से प्रार्थना करेंगे कि अब उन्हें जो अपनी विचारधाराएँ उच्चारण करनी हैं प्रगट करें। एक वाक्य और उच्चारण करना है कि मानव ऊँचा बने, महान् बने, राष्ट्र की संस्कृति को अपनाये परन्तु इस भूमि पर गौरव होना चाहिए।

मेरे प्यारे ! अन्य **ऋषियों ने ऐसा कहा है कि हमारा जन्म तो महान् इस पवित्र भूमि पर हो जहाँ मेरी माताएँ और मेरे प्यारे विधाता ब्रह्मचर्य का पालन करके अपने राष्ट्र को, अपने जीवन को ऊँचा बना गए हैं।** माता गार्गी के जीवन से प्राप्त होता है कि उन्होंने कई जन्म-जन्मान्तरों में वेदों का स्वाध्याय पाते हुए जब राजा जनक के काल में जन्म हुआ तो 25 वर्ष तक क्या 41 वर्ष तक वेदों का स्वाध्याय किया और अन्त में वैराग्य प्राप्त हुआ। आज माताओं के गौरव को इतना हताश बना दिया है, महान् उनके गौरव को शान्त कर दिया है। कैसा अन्धकार का काल आया? माताओं को शिक्षा देने के लिए तार्किक बन-बन कर आए और कहा कि देवियों को, कन्याओं को शिक्षा देना महान् पाप माना जाएगा, यह कैसा महान् दुर्भाग्य, यहाँ आया, कैसे महान् स्वार्थी आचार्य आ पहुँचे जिन्होंने अपने स्वार्थ को सिद्ध करना चाहा परन्तु तब भी उनका स्वार्थ सिद्ध न हो सका।

यहाँ तो उन आत्माओं की आवश्यकता है जो आत्मा यहाँ आ करके वैदिक पथ को दर्शा जाए, यहाँ उन आत्माओं की आवश्यकता नहीं जो अपने स्वार्थ को पूर्ण करने वाली हों और वेद के विपरीत चलने वाली हों। यदि यह संसार एक साथ मिलकर प्रभु से याचना करे कि हे प्रभु ! हमारे मध्य में उस व्यक्ति को न भेज जो हमारी आत्माओं के उत्सव को हताश बना दे, वह आत्मा आए जो यहाँ आ करके वेदों का प्रसार करे और महान् सब वेदों को और संस्कृति को जानने वाले बने। हमारे शरीर से जो महान् रश्मि उत्पन्न होवे वह वेद से भरी हुई हो, हमारी वाणी मातृ संस्कृति से भरी हुई हो। विधाता ! ऐसा महान् व्यक्ति हमारे मध्य में आना चाहिए जिस प्रकार महाराजा कृष्ण आए और नाना देवियों को, नाना पुरुषों को वैदिक पथ पर चलाकर चले गए।

अब हम शान्त करते चले जा रहे हैं, गुरुजी अपनी विचारधाराएँ प्रगट करेंगे। ''धन्यवाद।''

पूज्यपाद-गुरुदेव

मुनिवरो ! अभी-अभी मेरे प्यारे लोमश ने जैसा कहा है वह बड़ा बुद्धिपूर्वक, महान् और विचित्र था, हमें इनकी वार्ता बड़ी प्रिय और सुशोभित लगी। हम इन्हें बारम्बार धन्यवाद दे रहे हैं। हमें जो कुछ उच्चारण करना था वह प्रारम्भ में उच्चारण कर चुके हैं, लोमश मुनि ने बहुत कुछ कहा अब तो यह इच्छा हो रही है कि इन सब व्याख्यानों को समाप्त कर देना चाहिए, वेदमन्त्रों का पाठ हो जाए और शान्त हो जाएँ।

पूज्य महानन्द जी — ''गुरुजी आज आपने तो कुछ कहा नहीं, आप भी तो अपना कुछ प्रकाश दे दीजिए।''

''महानन्द जी ! अब हमारा वाक्य तो कल होगा, लोमश मुनि ने बहुत कुछ कहा है।''

पूज्य महानन्द जी — 'अच्छा ! धन्यवाद।'

मुनिवरो ! अब हमारे यह वाक्य समाप्त हो गए हैं, कल हमारा वाक्य जो कल प्रकरण हमने त्यागा है उससे आगे प्रसार किया जाएगा। लोमश मुनि से किसी काल में द्वितीय वाक्य प्रसार कराएँगे जैसा इन्होंने कहा है, यह अपने विचारों पर अनुसन्धान कर लेंगे उसके पश्चात् अपने विचार प्रगट करेंगे। अब हमारा वेदों का पाठ होगा, इसके पश्चात् वार्ता समाप्त हो जाएगी।

वेद पाठ----------

अच्छा भगवन्!

आनन्दित रहो!

दिनांक : 19 अगस्त, 1962

स्थान : बी.सी. पार्क, विनय नगर, नई-दिल्ली

(वेद प्रचार सप्ताह)

।। ओ३म् ।।

ऋषियों के उद्‌गार

1. इस प्रकृति में सब प्रकार का सँकलन रहता है जब महत् का मिलान होता है तो उसमें अँकुर रूप में सबका विकास रहता है अन्तरिक्ष में वह रमण करती रहती है।
2. परमात्मा इस महान प्रकृति का मन्थन अपने बालक आत्मा के लिये करता है।
3. जितनी भी सँसार में वाणी होती हैं इन सब वाणियों का सम्बन्ध इस संस्कृत से होता है।
4. जिस वाणी का भी विकास होता है उस वाणी का भी अँकुर रूप से उस सँस्कृत में मिलान है।
5. आदि ब्रह्मा से व्याकरण का विकास हुआ।
6. भौतिक विज्ञान की प्रबलता से कोई महान् लाभ नहीं।
7. रावण के राष्ट्र में निति थी धर्म नहीं था।
8. यर्थाथ यह है कि कलयुग का नाम अज्ञान है।
9. यह सँसार तो अधोगति को जा रहा है। इस सँसार की गति को न देखो। आज तुम शान्त होकर उस महान् गान को गाओ जिससे तुम्हारा वास्तविक विकास हो।
10. वेद वह अमूल्य विद्या है जिसको धारण करके हम अपने जीवन को सफल बनाते हैं।
11. वेद में वह भोजन है जिस भोजन से आत्मा तृप्त होता है।
12. जो मानव सँसार में अक्षरों का बौद्धिक होता है उस मानव का यह वेद उत्थान नहीं करता।
13. मानव का विकास उस काल में होता है जिस काल में मानव का जीवन ऊँचा होता है।
14. प्रतीत नहीं मानव का अन्तःकरण किस काल में जाग जाए, किस काल में समाप्त हो जाए।
15. जन्म-जन्मान्तरों के सँस्कार अन्तःकरण को शुद्ध कर उस प्रभु से सम्बन्ध करा सकते हैं जो परमात्मा विभु है जो पाप-पुण्य कर्मों का फल देने वाला होता है।
16. जो सँसार में आत्मा के तत्त्व को जान लेता है तो निश्चित है कि वह सँसार में क्या नहीं जानता।
17. मानव को अपने हृदय को पवित्र बनाना चाहिए और प्रत्येक विषय को गम्भीरता से विचारों, गम्भीरता से विचारने से तुम्हारा कार्य चलता रहेगा।
18. आज अध्यात्मिक विद्या का उत्थान करो।

सूचना

सभी आजीवन/वार्षिक सदस्यों को 'यौगिक प्रवचन' पत्रिका प्रत्येक मास की 10/11 तारीख को प्रेषित की जाती है। किसी भी सदस्य को पत्रिका प्राप्त न होने की स्थिति में अपने पोस्ट मैन से एक सप्ताह के समय में जानकारी करें और फिर भी न मिलने की स्थिति में अपने सम्बन्धित पोस्ट आफिस में इस विषय में लिखित एक प्रार्थना-पत्र पोस्ट मास्टर साहब को दें जिससे कि पत्रिका न मिलने की खोज-बीन डाक विभाग द्वारा कराके आपकी पत्रिका आपको समय पर मिलनी प्रारम्भ हो जावे। कृपया प्रार्थना-पत्र की एक प्रति पर डाक विभाग द्वारा प्राप्ति के हस्ताक्षर व मोहर लगवाकर हमें भी भेज देवें जिससे कि इस विषय में यहाँ भी डाक विभाग को अवगत कर दिया जावे।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

सदस्यता

पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की ज्ञान गंगा का मासिक पत्रिका ''यौगिक प्रवचन'' में, वैदिक अनुसन्धान समिति द्वारा प्रकाशन किया जाता है और जिस के आजीवन सदस्य बनने के लिए शुल्क 800 रु. और वार्षिक सदस्य बनने के लिए शुल्क 100 रु. है जिसको आप समिति के पते के साथ-साथ निम्न किसी एक पते पर भी डाक द्वारा भेजकर सदस्य बन सकते हैं—

1. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, प्रकाशन मन्त्री, ए-59, पंचशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017, फोन : 011-41030481
2. सुश्री नीरू अबरोल, कोषाध्यक्ष, K-3, लाजपत नगर-III, नई दिल्ली-110024, फोन : 011-41721294
3. श्री जितेन्द्र चौधरी, प्रचार मन्त्री, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मोबाइल : 9811707343

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	80.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	80.00
3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	60.00
4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	60.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	60.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	80.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	25.00
8.	आत्म-लोक	35.00
9.	धर्म का मर्म	40.00
10.	शँका-निवारण	30.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्व	40.00
12.	आत्मा व योग-साधना	35.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	125.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	125.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	125.00
17.	रामायण के रहस्य	35.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	40.00
19.	महाभारत के रहस्य	30.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	35.00
21.	रावण-इतिहास	50.00
22.	महाराजा-रघु का याग	30.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	35.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	35.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	35.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	35.00
27.	पंच-महायज्ञ	35.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	40.00
29.	याग-मन्जूषा	40.00
30.	आत्म-दर्शन	30.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	30.00
32.	याग और तपस्या	60.00
33.	यागमयी-साधना	35.00
34.	यागमयी-सृष्टि	35.00
35.	याग-चयन	40.00
36.	दिव्य-रामकथा	125.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	35.00
38.	दिव्य-ज्ञान	40.00
*39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	90.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	40.00
41.	आत्म-उत्थान	40.00
42.	तप का महत्व	40.00
43.	अध्यात्मवाद	40.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	40.00
45.	वैदिक-प्रभा	35.00
46.	प्रकाश की ओर	35.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	40.00
48.	वैदिक-विज्ञान	35.00
49.	धर्म से जीवन	35.00
50.	आत्मा का भोजन	40.00
51.	साधना	35.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	40.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	40.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	80.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	40.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	80.00
57.	माता मदालसा	50.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	80.00
59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	80.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	80.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	80.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	80.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	80.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएं	50.00
65.	प्रभु-दर्शन	50.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	80.00
67.	समाज उत्थान का मार्ग	50.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	80.00
*69.	ब्रह्म की ओर	50.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

उपरोक्त मूल्य 1 नवम्बर, 2015 से लागू है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध हैः-

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला-बागपत, (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 01234-240395
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)। मो. नं. : 09412888050
3. सुश्री नीरू अबरोल, के-3, लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, A-59 पंचशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी, सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-2642052
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4, पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री विवेक त्यागी, 16ए, अशोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड, (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0122-2316196
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मो. नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110-मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मो. नं. 09899228860, 09871367937
12. श्रीमती बाला, 251, दिल्ली गेट, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23282088
13. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे.पी. नगर (उ.प्र.) मो. नं. 09412139333
14. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मो. नं. 09313530505
15. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
16. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

अथर्ववेद ब्रह्म पारायण याग

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से पूज्यपाद- गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की सद्प्रेरणा एवम् आशीर्वाद से वैदिक अनुसन्धान समिति द्वारा प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी अथर्ववेद ब्रह्म पारायण याग का आयोजन आर्य समाज मालवीय नगर नई दिल्ली के प्रांगण में दिनाँक 11 दिसम्बर, 2015 से 13 दिसम्बर, 2015 तक बड़े हर्ष एवम् उल्लास के साथ आयोजित किया जा रहा है जिसमें आप सभी अपने सम्बन्धियों, मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

मासिक सहयोग

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	1000 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	250 रुपये
डॉ. ओ.पी. आर्य, आगरा, उत्तर प्रदेश	125 रुपये
श्री गुलजार सिंह, जगत पुरी, कृष्णा नगर, दिल्ली	100 रुपये
श्रीमती वीना त्यागी, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश	100 रुपये
मास्टर कवन्धि, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ, अँकुर अपार्टमैन्ट, दिल्ली	101 रुपये

सूचना

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज द्वारा संस्थापित वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) दिल्ली को दानदाताओं द्वारा दान देने पर आयकर विभाग की धारा 80 जी के अन्तर्गत छूट 26-9-2014 को मिल गई है जो कि 2015-2016 से लागू है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

शृङ्गीऋषि बेवसाईट

Website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

उद्‌बोधन

जब हम वेद की प्रतिभा को विचार-विनिमय करने लगते हैं तो कितना ही सँसार का विशेषज्ञ और व्याख्याता हो वह केवल सूर्य के एक सूक्ष्म से प्रकाश के तुल्य ही रहता है क्योंकि उसका ज्ञान अनन्त है और महानूता से परणित है। आज जब हम प्रकृति में प्रभु का सन्निधान मात्र ही स्वीकार करते हैं और प्रकृति का स्वभाव उमड़ने लगता है परन्तु जब हम यह विचारते हैं कि मानव विज्ञान में क्या किसी भी आंगन में अभिमान् का अधिकारी नहीं होता, वह अपने गौरव से यह नहीं उच्चारण कर सकता कि मैंने इस वस्तु को जाना है, उस पर वह अभिमान् नहीं कर सकता उसे अधिकार ही नहीं है क्योंकि जो वस्तु मानव जानने का प्रयास करता है वह जो प्यारा देव प्रभु है वह इतना महान् और अलौकिक है कि उसने उन वस्तुओं को तेरे विचारने से पूर्व उनका निर्माण कर दिया, उनको उत्पन्न कर दिया है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 44 : अंक : 517
अक्टूबर 2015

मूल्य :
दस रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R. No. DL (S)-01/3220/2015-17
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2015-2017
POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-10-2015
Published on 5th day of the same month